भूमिका

“प्रवास मात्र हमारा भूगोल नहीं, ये स्वयं से हमारा नया परिचय था।”

हरीश मसंद की संवेदनशील आत्मकथा “अपनी बारिश” (द रेन आई क्लेम) स्मृतियों और भूगोल की सीमाएँ पार कर, अपने देश से दूर एक और धरती को अपनाने और उसमें ढलने की यात्रा है। हर प्रवासी की तरह, यहाँ भी जीवन आशाओं और शंकाओं से भरा हुआ है, और जो शुरुआत में एक गलती प्रतीत होता है, अंततः वही सब कुछ ठीक कर देता है।

शुरुआती दौर में प्रवासी दंपति को अपनेपन और परायेपन की पीड़ा वेदना देती है। वे एक-दूसरे का सहारा बनते हैं और अनिद्र रातों में अनिश्चितता के भय को हावी नहीं होने देते। हरीश एक सिद्धहस्त लेखक हैं – वे हर बारीकी, हर क्षति और पीड़ा, हर आशा और आत्मविश्वास को शब्दों के माध्यम से जीवंत कर देते हैं। पाठक उनके शब्दों की धारा में बंध जाता है।

एक द्विभाषी कवि के रूप में हरीश ने गहन काव्यात्मक यात्रा की है, जो स्मृतियों और भावनाओं को झकझोरती है और पाठक को उसकी अपनी व्यक्तिगत यात्रा पर भी ले जाती है। जड़ों को उखाड़कर कहीं और रोपना हमेशा पीड़ादायक लगता है, किंतु यही बढ़ने और और अधिक उज्ज्वल और सशक्त खिलने का एकमात्र मार्ग है। यही इस आत्मकथा के लेखक के साथ घटित होता है।

भारत ने उन्हें श्रेष्ठ शिक्षा दी, पारिवारिक मूल्यों का संस्कार दिया, बड़ों के प्रति सम्मान करना सिखाया, कठिनाइयों को स्वीकार कर उनका सामना करना सिखाया, और एक गहन धार्मिक एवं आध्यात्मिक वातावरण प्रदान किया। साथ

ही, इसने उन्हें उस अन्याय का भी सामना कराया जो देश के संविधान की आत्मा के विपरीत था। और यह भी एक कटु सत्य है।

इस पुस्तक की भूमिका लिखना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। मैंने हरीश को दिल्ली विश्वविद्यालय में एक स्नातक छात्र के रूप में जाना था, जब मैं स्वयं एक शिक्षक के रूप में विकसित हो रही थी। वे एक असाधारण युवा थे। उन्होंने महिला विकास केंद्र से जुड़कर एक अप्रत्याशित कदम उठाया। बहुत जल्दी उन्होंने लैंगिक मुद्दों को समझ लिया और महिलाओं को सशक्त बनाने तथा एक अधिक समानतापूर्ण समाज बनाने की आवश्यकता को पहचाना। केंद्र के अध्यक्ष के रूप में चुने जाने के बाद, हम पुस्तकें खरीदते, संगोष्ठियों में भाग लेते, और एक दिन उन्हें अपने देश की संसद एनेक्सी में बोलने के लिए आमंत्रित भी किया गया।

थियेटर, नुक्कड़ नाटक, वाद-विवाद, पटकथा लेखन, फिल्म निर्देशन, रेडियो जॉकी, कार्यक्रम प्रबंधन – ये सब उनकी प्रतिभाएँ हैं। कवि, कहानीकार और उपन्यासकार – हरीश की यह द्विभाषी आत्मकथा “अपनी बारिश” (द रेन आई क्लेम) हर प्रवासी पाठक के मन को छू लेगी, चाहे उसने किसी भी देश को अपनाया हो।

प्रवासी अनुभव अनेक रूपों में साझा होता है – विशेषकर स्मृतियों का भारी बोझ सबका एक सा होता है। परंतु हरीश ने इस बोझ को स्वयं पर हावी नहीं होने दिया। उन्होंने एक सचेत निर्णय लिया कि अपनी जन्मभूमि से निकल अब उन्हें अपनी कर्मभूमि को पाना है। उनकी अंतर्निहित मानवता ही उन्हें कनाडा के जीवन में पूरी तरह घुलने-मिलने की शक्ति देती है, और कनाडा की विविधता स्वयं में एक उत्सव है।

आत्मकथा का शीर्षक ही सब कुछ कह देता है। उन्होंने यहाँ के मौसम को अपना मान लिया और यहाँ की लगातार पड़ने वाली बारिश अब उनकी अपनी

हो गई। वे इतनी गहराई से इसकी भीगन में डूब गए हैं कि पीछे छूटे मानसून की कोई तड़प शेष नहीं रही। यह वर्षा एक रूपक है – एक इच्छुक, प्रसन्न समर्पण का।

हरीश की भारतीय विरासत ही उनके कनाडाई अनुभव की समृद्धि का आधार है। उल्लेखनीय है कि बच्चों ने बहुत जल्दी अपने नए परिवेश को अपना लिया और विद्यालय उनके लिए एक आनंददायक अनुभव बन गया, जिसने उनकी प्रतिभाओं को निखारा। उनकी पत्नी प्रिया के सहायक और प्रोत्साहित करने वाले शब्द उनके नए जीवन की नींव बने। प्रिया की भूमिका – कौशल विकास के माध्यम से स्वयंभू की स्वतंत्रता के साथ, उन भूमिकाओं से मुक्त होकर जिन्हें उन्होंने पीछे छोड़ दिया (जो सीमित और स्त्रियों के लिए दमनकारी थीं) – यह बताती है कि क्यों और कैसे उन्होंने भी इस बारिश को अपना माना।

“बचपन से ही, मैं आसमान में उड़ने के लिए पंखों की लालसा करता था, दुनिया को देखने की चाह रखता था।”

इस पंक्ति में हरीश मसंद उन आकाशों के बारे में लिखते हैं, जिन्हें पार कर वे अपने उजाले की ओर बढ़े। हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में लिखी गई यह संक्षिप्त आत्मकथा अपने आप में एक अद्वितीय अनुभव है। लेखक चाहते हैं कि यह कथा दोनों भाषाओं में पाठकों तक पहुँचे। यह दृढ़ निश्चय और सहनशीलता की कहानी है और समुदाय के सामाजिक जीवन का हिस्सा बनने का आह्वान भी। यह उन सबका आभार प्रकट करती है जिन्होंने उनका हाथ थामा, मदद की और उन्हें घर जैसा आभास कराया। घर – यही शब्द सार है। यह कोई “घर से दूर घर” नहीं है, बल्कि धरती के एक और हिस्से में घर है। यह जड़ों को भूलने का नहीं, बल्कि उन्हें कहीं और रोपकर एक विशाल, छायादार, पुष्पित, फलदायी वृक्ष बनने का प्रयास है।

इस खूबसूरती से रेखांकित यात्रा की भूमिका लिखना मेरे लिए सम्मान की बात है – एक ऐसे परिवार की कथा जो भारत से कनाडा आया और ब्रिटिश कोलंबिया की प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर भूमि पर उस परिवार नें प्रेम और स्वीकार्यता का एक मानवीय सफर तय किया।

“हम यहाँ उज्जवल भविष्य के लिए आए हैं,” – ये बात उनकी पत्नी प्रिया विशवास के साथ कहती हैं। यह वाक्य प्रमाणित करता है कि उस प्रवासिनी का मौन संघर्ष किस तरह उस व्यक्तित्व में जीवंत हो उठता है। “प्रिया की शक्ति मेरा साहस बन गई,” – हरीश कहते हैं।

यह स्वयं को तोड़ने, पुरानी पहचानें छोड़ने, और शून्य से पुनर्निर्माण करने की कहानी है।

हीरो से जीरो तक: हर प्रवासी के लिए एक मार्गदर्शिका 'अपनी बारिश’ ।

प्रो. रूपाली सरकार गौर (दिल्ली विश्वविद्यालय, भारत)
कवयित्री, उपन्यासकार, संपादक, पर्यावरणविद्
सामाजिक न्याय एवं पशु अधिकार कार्यकर्ता

Foreword

"We didn’t merely cross borders, we crossed our own thresholds, evolving into new selves."

Harish Masand's poignant memoir entitled ‘The Rain I Claim’ (Apni Baarish) steps across geography and memories to adopt and adapt another land far away from his own. Like all immigrants, life is full of hopes and doubts, and at the end of what seems like a mistake, everything works out well.

The angst of belonging and not belonging at first haunts the immigrant couple. They support each other through sleepless nights. Harish is a consummate writer who brings alive every nuance of loss and pain and hope and confidence to the fore. We are riveted by the flow of words.

A bilingual poet, Harish makes a deeply poetic journey, stirring memories and emotions and taking us along on our own personal journeys. The very act of transplanting seems painful. Yet it is the only way to grow and bloom brighter and stronger. And that is what happens with the author of the memoir.

India provided him the best in education, a sense of family values, respect for elders, accepting and surrendering to difficulties, and a deep, constant religious and spiritual environment. It also brought him face to face with sources of injustice contrary to the constitution of the country. And this is an undeniable bitter truth.

I am privileged to write this foreword to a book whose narrative goes far beyond and before it. Having known Harish as a young undergraduate at Delhi University, where I too was growing as a teacher, I found him a remarkable young man. He joined the Women's Development Centre, which was unprecedented. Very quickly he learnt about gender issues and the need to empower women and create a more equitable society. Elected as President of the Centre, we shopped for books, attended seminars, and then one day he was invited to speak at our nation’s Parliament Annexe.

Theatre, street plays, debate, script writing, film direction, radio jockey, event management are his forte. Poet and short story writer and novelist, his bilingual memoir ‘The Rain I Claim’ will touch every immigrant reader, no matter to which country he or she moves.

The immigrant experience in many ways has a commonality, nostalgia being a heavy burden. But not for Harish, who made a deliberate decision to explore a new place on this earth. It's his innate humanity that allows him a complete absorption in the Canadian way of life, and Canada, with its diversity, is a celebratory factor.

The title of the memoir tells us all. He has claimed the seasons here as his own. The rains here are his. He has so drenched himself in its wetness he has no longing for the monsoons left behind. The rain is a metaphoric exposition of a willing, happy surrender.

Harish's Indian heritage is what he brings to the richness of his Canadian experience. It is noteworthy that the children quickly acclimatised, and school was a pleasurable experience bringing out the best in their talents. The support and wise encouraging words of his wife Priya is a constant in his settling down. Her contribution through skill development and the freedom to be oneself, and not play roles she had left behind — which were restrictive and regressive, especially for women — tells us how and why she too claims the rain as her own.

"Since childhood, I had always yearned for wings to fly across the skies, to see the world."

So here is Harish Masand writing about the skies he flew across to find his place in the sun. A graphically written short memoir in both Hindi and English is in itself a unique experience. The author wishes the narrative to reach readers in both languages. It's a story of determination and resilience and a call out to be part of the social life of the community. It is an acknowledgement of all those who helped and made them feel at home. Home is the word. Not a home away from home, but a home in another part of the earth. It's not about forgetting roots — it's about replanting and growing into a big, shady, flowering, fruiting tree.

It's an honour to write the foreword for this beautifully delineated journey of a family who emigrated from India to Canada, to the salubrious, nature-laden British Columbia. A humane story of love and acceptance.

"We came here for a bright future" is what his spouse Priya tells him with trust. We see the female immigrant and the quiet struggle embodied in the persona. "Her strength became mine," Harish says.

It is about breaking yourself down, shedding old identities, and rebuilding from scratch. From hero to zero: a guide for all immigrants, ‘The Rain I Claim’.

Prof. Roopali Sircar Gaur (Delhi University, India)

Poet, Novelist, Editor, Ecologist, Social justice and Animal activist.